आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2379 • उदयपुर, मंगलवार 29 जून, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्
सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

सेवा–जगत्
मानवता का प्रतीक आपका अपना सेवा संस्थान

नारायण सेवा द्वारा सिरोही में 62 गरीब परिवारों को राशन दिया

नर को नारायण का स्वरूप मानते हुए असहाय, दिव्यांग, मूक बधिर एवम् दूसरी लहर कोरोना महामारी के चलते बेरोजगार हुए गरीब कामगारों को नारायण सेवा संस्थान उदयपुर की शाखा सिरोही द्वारा निःशुल्क राशन का वितरण किया गया। जिसमे पूरे भारतवर्ष में 50000 परिवारों को राशन निःशुल्क जा रहा है। सिरोही के अंतर्गत 62 गरीब परिवारों को निःशुल्क राशन दिया गया। सिरोही शाखा संयोजक अदाराम जी भाटिया ने बताया कि श्री कैलाश जी सुथार संरपच झाड़ोली ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। मुख्य अतिथि श्री नरेन्द्र सिंह जी ने संस्थान गतिविधियों का अवलोकन किया। संस्थापक चैयरमेन कैलाश जी 'मानव' ने बताया कि संस्थान 36 वर्षो से दीन–दुःखियों की निःस्वार्थ सेवा कर रहा है। इस वर्ष कोरोना काल में संस्थान घर–घर भोजन सेवा, ऑक्सीजन सिलेंडर, एम्बुलेंस सेवा, कोरोनाकिट, निःशुल्क हाइड्रोलिक बेड भी उपलब्ध करवाने का संकल्प लिया इस दौरान हजारों कोरोना संक्रमित को निःशुल्क सेवा उपलब्ध करवायी जा रही हैं। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि संस्थान ने ऐसे जरूरतमंदों के लिए नारायण गरीब परिवारों तक राशन पहुंचाने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

इसी क्रम में उदयपुर शहर के विभिन्न आदिवासी क्षेत्र में शिविर लगाकर निःशुल्क राशन वितरण किया जा रहा है। प्रत्येक किट में 15 किलो आटा, 5 किलो चावल, 4 किलो दाल, 2 किलो तेल, 2किलो शक्कर, 1 किलो नमक एवं आवश्यक मसाले दिए गए। सिरोही आश्रम की पूरी टीम ने चयनित परिवारों को राशन वितरण में सहयोग प्रदान किया।

एक वक्त के भोजन को भी मोहताज सारा परिवार, दुःखी रामदास को मिली मदद

मानवता को झकझोर देने वाली दर्द भरी दास्तां है गुप्तेश्वर के पास बिलिया गांव में रहने वाले रामदास वैष्णव की। रामदास वैष्णव कारीगर है, जो अन्य श्रमिकों की तरह रोज कमाते और खाते है! कोरोना में उनका काम बंद है। परिवार के 6 सदस्यों के सामने भूख को शान्त करना मुश्किल हो गया उन्होंने नारायण सेवा संस्थान से मदद की गुहार लगाई।

संस्थान ने उनकी मदद करते हुए एक माह का राशन प्रदान किया। रामदास राशन पाकर संतुष्ट हुए ओर ईश्वर को धन्यवाद देते हुए उनकी आँखों से खुशी के आँसू छलक पड़े।

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि ऐसे ही 12 अन्य गरीब मजदूर परिवारों को भी निदेशक वंदना अग्रवाल की टीम ने राहत पहुचायी।

हादसे में घायल को कृत्रिम पैर लगाया

नरेश बस की प्रतीक्षा में अपने गांव पुर की सड़क के किनारे खड़ा था कि सामने से तेज रफ्तार में आते हुए ट्रक ने उसे चपेट में ले लिया, जिससे दायां पांव बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। अस्पताल में घुटनों तक पाँव काटने के अलावा डॉक्टर्स के पास अन्य कोई विकल्प भी नहीं था। नरेश ने बताया कि वह गरीब परिवार का बी.ए. का छात्र है।

कृत्रिम पांव लगवाना भी उसके सामर्थ्य से बाहर था। कुछ ही माह पूर्व उसे नेट पर नारायण सेवा के बारे में जानकारी मिली, और यहां आने पर भीलवाड़ा जिले के तसोरिया गांव के नरेश खटीक (23) को नारायण सेवा संस्थान में कृत्रिम मोड्यूलर पैर निःशुल्क लगाया।

गंगा शहर निवासी गुवाहाटी प्रवासी लोढा परिवार ने पेश की मिशाल

पुत्र की शादी में खर्च नहीं कर, दिव्यांगों के ऑपरेशन का लिया संकल्प

नारायण सेवा संस्थान बनी प्रेरणा का स्रोत

बीकानेर। गंगाशहर निवासी व गुवाहाटी प्रवासी समाजसेवी मानमल लोढा ने अपने पुत्र नितेश लोढा की शादी को वृहद स्तर पर न करके एक नारायण सेवा संस्थान के माध्यम से दिव्यांग का ऑपरेशन करवाने का निर्णय लिया है। नारायण सेवा संस्थान बीकानेर के प्रेरक कमल लोढा ने बताया कि गुवाहाटी के व्यवसायी मानमल लोढा ने बताया कि उत्सव के अवसर अनेक मिल जाएंगे लेकिन इस विकट दौर में सेवा धर्म निभाना जरूरी है।

गौरतलब है कि नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर 4 लाख से ज्यादा दिव्यांग ऑपरेशन कर चुकी है। कोरोना काल में 50,000 परिवारों को अनाज का निःशुल्क वितरण किया।

टूटने से बची सांसो की डोर

मेरा नाम सुशीला है मेरे पति की 3 साल पहले मौत हो गई थी। मेरे 12 साल का एक बेटा है। मैं घरों में झाड़ू – पौछा करने का काम करती हूँ। 5000– 6000 रुपये महीने का कमाकर जी रही हूँ। एक रात मुझे खाना बनाते सर्दी लगी और तेज खांसी आने लगी । खाना बनाकर सो गई रात में बुखार भी आ गया ।

सांस लेने में परेशानी – मैं अस्पताल गई। डॉक्टर्स ने कोरोना की जांच कर दवा दी और घर पर आराम करने की सलाह दी। दूसरे दिन मुझे सांस लेने में तकलीफ होने लगी । तभी मुझे मेरी बहन ने फोन पर बताया कि नारायण सेवा से ऑक्सीजन मंगा लो। मैंने संस्थान से ऑक्सीजन का सिलेंडर मांगा तो उनके कार्यकताओं ने तत्काल घर पर पहुंचाया। उसी दिन से संस्थान ने भोजन पैकेट भी भेजने शुरू कर दिए । 5 – 6 दिन में मेरी तबीयत ठीक हो गई ।

अंतहीन संभावनायें – दिव्यांगता मिटाने के लिये विभिन्नआयाम

WORLD OF HUMANITY का निर्माण प्रगति पर.....

अंतहीन संभावनाएं - दिव्यांगता मिटाने के विभिन्न आयाम

चिकित्सा
- निदान (एक्स रे, ओपीडी, लैब)
- उपचार (कृत्रिम अंग और कैलीपर्स)
- पोस्ट ऑपरेटिव केयर (वार्ड, आईसीयू)
- चिकित्सा सहायता (फार्मेसी एवं फिजियोथेरेपी)

स्वावलम्बन
- हस्तकला या शिल्पकला
- सिलाई प्रशिक्षण
- डिजिटल (कंप्यूटर) प्रशिक्षण
- मोबाइल फोन मरम्मत प्रशिक्षण
- नारायण चिल्ड्रन एकेडमी (निःशुल्क डिजीटल स्कूल)

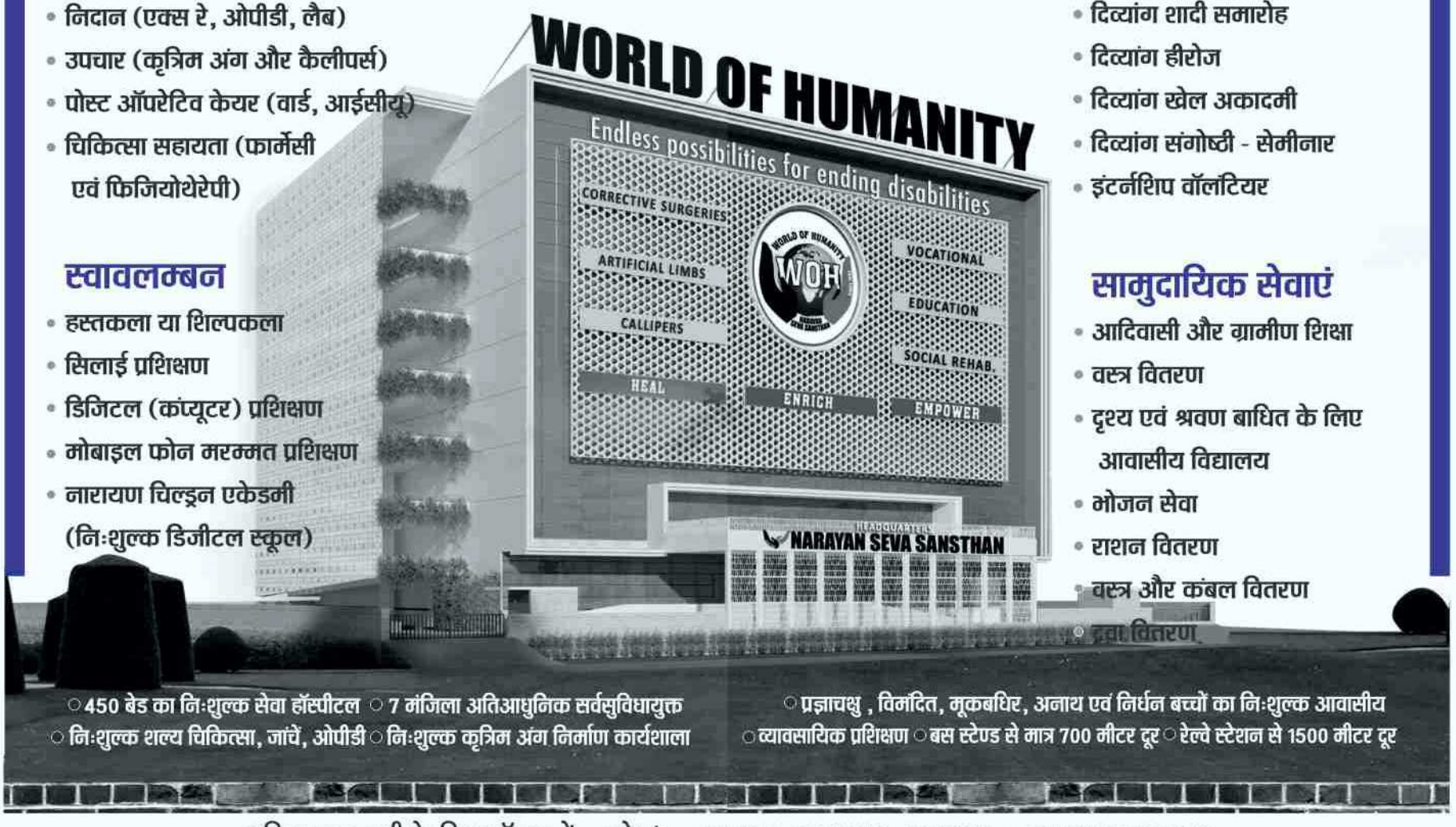

सशक्तिकरण
- दिव्यांग शादी समारोह
- दिव्यांग हीरोज
- दिव्यांग खेल अकादमी
- दिव्यांग संगोष्ठी - सेमीनार
- इंटर्नशिप वॉलंटियर

सामुदायिक सेवाएं
- आदिवासी और ग्रामीण शिक्षा
- वस्त्र वितरण
- दृश्य एवं श्रवण बाधित के लिए आवासीय विद्यालय
- भोजन सेवा
- राशन वितरण
- वस्त्र और कंबल वितरण
- दवा वितरण

○ 450 बेड का निःशुल्क सेवा हॉस्पीटल ○ 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त ○ निःशुल्क शल्य चिकित्सा, जांचें, ओपीडी ○ निःशुल्क कृत्रिम अंग निर्माण कार्यशाला

○ प्रज्ञाचक्षु , विमंदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों का निःशुल्क आवासीय ○ व्यावसायिक प्रशिक्षण ○ बस स्टेण्ड से मात्र 700 मीटर दूर ○ रेल्वे स्टेशन से 1500 मीटर दूर

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

सम्पादकीय

सेवा में अनंत संभावना

सेवा मानव जीवन की सर्वोत्कृष्ट करनी है। जन्म से ही मानव अंश है तथा ईश्वर अंशी। सेवा सीधा–सीधा ईश्वरीय कार्य है। अतः अंश जितनी सेवा करेगा उतना ही वह अंशी अर्थात् ईश्वर के समीप होता चला जाएगा। प्रभु ने सेवा की महत्ता को प्रतिपादित करने के लिए अपने अवतरण में स्वयं भी अनेक प्रकार की सेवाएं की हैं। सेवारूपी साधना से परमात्मा शीघ्र रीझता है। उसे अपने भक्त से यही अपेक्षा रहती है कि वह सेवा का चिन्तन, सेवा का प्रयत्न और सेवा का जीवन साकार कर ले। सेवा चाहे किसी भी प्राणी की हो, उसकी श्रेष्ठता समान है। सेवा शरीर से हो या विचार और भावना से उसे सेवा की श्रेणी में ही गिना जाता है। किसी सद्कार्य की सराहना या यथाशक्ति सहयोग भी सेवा का ही एक रूप है। सेवा के अवसर हमारे जीवन के इर्दगिर्द उपस्थित हैं। बस हमें उन्हें पहचानना और उपयोग करना है। यह भी परमात्मा की पूजा का एक विधान है।

कुछ काव्यमय

सेवा की संकल्पना,
देती रहे उजास।
परमपिता तुमसे यही,
विनती मेरी खास।।
जीवन सेवा में खपे,
ऐसा हो सौभाग।
निशिवासर जलती रहे,
परहित वाली आग।।
भावों से सेवा करूं,
तब तो धन धन भाग।
भाव नहीं फिर भी प्रभु
जलता रहे चिराग ।।
जो सेवा अवसर मिले,
कहीं नहीं हो चूक।
हाथ पकड़ समझा दियो,
कह करके दो टूक।।
करुणा की हो आरती,
सेवा का हो भोग।
दीनदयालु खुश रहे,
ऐसा हो संजोग।।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

हम तो निमित्त हैं

सृष्टिकर्त्ता ने एक दिन सोचा कि धरती पर जाकर कम से कम अपनी सृष्टि को तो देखा जाये। धरती पर पहुँचते ही सबसे पहले उनकी दृष्टि एक किसान की ओर गई। वह कुदाली लिये पहाड़ खोदने में लगा था। सृष्टिकर्त्ता प्रयत्न करने पर भी अपनी हँसी न रोक पाये। उस इतने बड़े कार्य में केवल एक व्यक्ति को लगा देख और भी आश्चर्य हुआ। वह किसान के पास गये, उन्होंने कारण जानना चाहा तो उसका सीधा उत्तर था। महाराज ! मेरे साथ कैसा अन्याय है ? इस पर्वत को अन्यत्र स्थान ही नहीं मिला। बादल आते हैं, इससे टकराकर उस ओर वर्षा कर देते हैं और पर्वत के इस ओर मेरे खेत हैं वे सूखे ही रहते हैं। क्या तुम इस विशाल पर्वत को हरा सकोगे ? क्यों नहीं ? मैं इसे हराकर ही मानूँगा, यह मेरा दृढ़ संकल्प है। सृष्टिकर्त्ता आगे बढ़ गये। उन्होंने सामने पर्वतराज को याचना करते देखा। वह हाथ जोड़े गिड़गिड़ा रहा था विधाता, इस संसार में सिवाय आपके मेरी रक्षा कोई नहीं कर सकता। क्या तुम इतने कायर हो, जो कि किसान के परिश्रम से डर गये मेरे भयभीत होने के पीछे जो करण है, क्या आपने अभी–अभी नहीं देखा कि किसान में कितना आत्म–विश्वास है, वह मुझे हटाकर ही मानेगा। अगर उसकी इच्छा इस जीवन में पूरी न हुई तो उसके छोड़े हुए काम को उसके पुत्र और पौत्र पूरा करेंगे और मुझे भूमिसात करके ही दम लेंगे। आत्म विश्वास असंभव लगने वाले कार्यों को भी संभव बना देता है, – पर्वतराज ने कहा।

आज मानवता कराह रही है – दानवता हँस रही है। समाज में दुःखों का अन्त नजर नहीं आ रहा है। और सूर्य की किरणें हर घर तक पहुँचने में पूर्ण समर्थ नहीं है पर वनांचल में दुःखों के अन्धकार का साम्राज्य आज भी मौजूद है। समाज में व्याप्त दुःखों का एक पहाड़ खड़ा है। आपश्री के सहयोग, वरदहस्त, संरक्षण से संस्थान भी उसी किसान की तरह दृढ़ संकल्प एवं आत्म विश्वास के साथ इस पहाड़ को गिराने में लगा है। कार्य बहुत बाकी है अभी मंजिल का रास्ता मिला है, मंजिल अभी दूर है। हमारा विश्वास प्रबल है, कदम इसी दिशा में बढ़ रहे हैं, साथ एक सम्बल आपका पुरजोर मिल रहा है, तथापि आवश्यकता है अधिक हाथों की। हजारों मन से संकल्प उठने की। जी हाँ, साथ आपश्री का आशीर्वाद इसी प्रकार मिलता रहेगा, अगर समाज में फैली असमानता की खाई को जीवन पर्यन्त लगे रहने के बाद भी हम पूरा नहीं कर पायेंगे तो जो आज बालगृह में बच्चे शिक्षित हो रहे हैं, जो विधवाएँ स्वावलम्बी प्रशिक्षण ले रही हैं, जो विकलांग ऑपरेशन के बाद खड़े होकर चल रहे हैं वे इस कार्य को पूरा करेंगे। अगर इस हेतु पुनः जन्म भी लेने की आवश्यकता रही तो इसी कार्य हेतु जन्म दें, यही, प्रार्थना प्रभु से निरन्तर रहेगी।

प्रभु का कार्य है – प्रभु ही कर रहे हैं –हम सब हैं निमित्त मात्र।

–कैलाश 'मानव'

सच्चा राजा

बंगाल में गुष्करा एक छोटा–सा स्टेशन है। एक दिन रेलगाड़ी आकर स्टेशन पर खड़ी हुई। उतरने वाले झटपट उतरने लगे और चढ़ने वाले दौड़–दौड़कर गाड़ी में चढ़ने लगे। एक बुढ़िया भी गाड़ी से उतरी। उसने अपनी गठरी खिसका कर डिब्बे के दरवाजे पर तो कर ली थी; किन्तु बहुत चेष्टा करके भी उतार नहीं पायी थी। कई लोग गठरी को लाँघते हुए डिब्बे में चढ़े और डिब्बे से उतरे। बुढ़िया ने कई लोगों से बड़ी दीनता से प्रार्थना की कि उसकी गठरी उसके सिर पर उठाकर रख दें; किन्तु किसी ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। लोग ऐसे चले जाते थे, मानो बहरे हों। गाड़ी छूटने का समय हो गया। बेचारी बुढ़िया इधर–उधर बड़ी व्याकुलता से देखने लगी। उसकी आँखों से टप–टप आँसू गिरने लगे।

एकाएक प्रथम श्रेणी के डिब्बे में बैठे एक सज्जन की दृष्टि बुढ़िया पर पड़ी। गाड़ी छूटने की घंटी बज चुकी थी; किन्तु उन्होंने इसकी परवाह नहीं की। अपने डिब्बे से वे शीघ्रता से उतरे और बुढ़िया की गठरी उठाकर उन्होंने उसके सिर पर रख दी। वहाँ से बड़ी शीघ्रता से अपने डिब्बे में जाकर जैसे ही वे बैठे, गाड़ी चल पड़ी। बुढ़िया सिर पर गठरी लिये उन्हें आशीर्वाद दे रही थी – 'बेटा ! भगवान् तेरा भला करे।'

तुम जानते हो कि बुढ़िया की गठरी उठा देने वाले सज्जन कौन थे ? वे थे कासिम बाजार के राजा मणीन्द्रचन्द्र नन्दी, जो उस गाड़ी से कोलकाता जा रहे थे। सचमुच वे राजा थे, क्योंकि सच्चा राजा वह नहीं है जो धनी है या बड़ी सेना रखता है। सच्चा राजा वह है, जिसका हृदय उदार है, जो दीन–दुःखियों और दुर्बलों की सहायता कर सकता है ? ऐसे सच्चे राजा बनने का तुम में से सबको अधिकार है। तुम्हें इसके लिये प्रयत्न करना चाहिये।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

गांवों में कच्ची शराब का अत्यधिक प्रचलन है। कैलाश ने सभी को शराब के नुकसान समझाये और आह्वान किया कि शराब छोड़ दें। शहरों के मुकाबले गांवों के लोग वचन के पक्के होते हैं। शहरवासी तो झूठ मूठ की भी शपथ लेने में हिचकिचाता नहीं मगर ग्रामवासी, वो भी आदिवासी, अपने संकल्प के पक्के होते हैं।

कैलाश की बातें उन्हें अच्छी लगी मगर वे झूठ–मूठ की शपथ लेने को तैयार नहीं थे–उनका यही कहना था कि पूरा जीवन व्यतीत हो गया शराब पीते–पीते, यूं यकायक वे इसे कैसे छोड़ सकते हैं। इसके बावजूद भी कुछ लोग ऐसे भी थे जो शपथ लेने को तैयार हो गये। उन्होंने अपने बावजी की शपथ ली और शराब छोड़ने का संकल्प ले लिया। यह स्पष्ट था कि शपथ उन्हीं लोगों ने ली है जो इसे निभाने को तत्पर हैं।

सत्तू खाने के बाद गरीब वंचितों के प्रसन्न मुख मंडल को देख कैलाश को भी संतोष की अनुभूति हुई। जिस दुरूह कार्य को पूर्ण करने का बीड़ा उसने उठाया था उसकी सुखद शुरूआत हो चुकी थी। अब तो यह क्रम बन गया, वह 15–15 दिन में जाने लगा। लोगों को ज्यूं ज्यूं इसका पता चलता गया, शिविर–दर– शिविर आने वालों की संख्या बढ़ती गई। कैलाश इस अपार जनसमूह को देख अभिभूत होता रहता, उसके अवचेतन मन में इन्हीं क्षणों में कब नारायण सेवा का विचार अंकुरित हो गया, उसे पता ही नहीं चला।

इस तरह के सेवा कार्यों में कैलाश का अत्यधिक समय व्यतीत हो रहा था। इसका उसकी एकमात्र आजीविका–राजकीय सेवा, पर भी असर पड़ रहा था। कैलाश ने सेवा कार्य के साथ–साथ अपनी आजीविका को भी गंभीरता से लिया। उसने पोर्म्स एकाउन्टेन्ट की परीक्षा देने का निश्चय किया।

नौकरी में आने के 3 वर्ष बाद यह परीक्षा दे सकते थे। उसने कड़ी मेहनत कर यह परीक्षा पास कर ली। इसका लाभ यह हुआ कि उसका वेतन 45 रु. बढ़ गया। कैलाश को ऐसा लगने लगा जैसे वह यकायक सम्पन्न हो गया है।

अंश-47

जीवन में खुशियाँ व्याप्त, दिल का दर्द समाप्त

नई दिल्ली के रहने वाले अशोक कुमार के 4 वर्षीय सुपुत्र अभयदास के बचपन से ही दिल में छेद था। बच्चे को शुरुआत से ही बहुत दिक्कत होती थी। दिन ब दिन बच्चा कमजोर पड़ता जा रहा था। बच्चे को साँस लेने में भी दिक्कत आती थी। अशोक कुमार अपने बच्चे को लेकर कई जगह गये, परन्तु बच्चे की तबीयत सही नहीं हो रही थी। तब उन्होंने दिल्ली के एक प्राईवेट हॉस्पीटल में अपने बेटे का चैकअप करवाया जहाँ डॉक्टर ने दिल में छेद बताया तथा ऑपरेशन के लिए करीब 1 लाख रुपये का खर्चा बताया। अशोक कुमार के पास इतने पैसे नहीं थे कि वे अपने बच्चे का ऑपरेशन करवा सकें। महीने के मात्र 5–6 हजार रुपये कमाकर अपने परिवार के 5 सदस्यों का खर्चा चलाने वाले अशोक कुमार निराश थे, क्योंकि वे अपने बच्चे का ऑपरेशन नहीं करवा पा रहे थे। एक दिन उन्हें टी.वी. के माध्यम से नारायण सेवा संस्थान ' द्वारा आयोजित कैम्प के बारे में जानकारी मिलीं इस पर वे तुरंत अपने बच्चे को लेकर उदयपुर आये जहाँ उनके बच्चे का चैकअप किया गया और ऑपरेशन की दिनांक दी गई। कुछ दिन बाद बच्चे का जयपुर के नारायण हृदयालय हॉस्पीटल में ऑपरेशन किया गया। बच्चे के ऑपरेशन में करीब 90 हजार रुपये का खर्चा आया जो नारायण सेवा संस्थान के माध्यम से दादा कान हसोमल लखानी जी द्वारा वहन किया गया। आज वह स्वस्थ है तथा सामान्य बच्चों की तरह खेलकूद सकता है।

सांस लेने का बेहतर तरीका है प्राणायाम

रोज सुबह प्राणायाम, अनुलोम– विलोम, शीर्षासन, मत्स्य आसन करने से शरीर से विषैले पदार्थ बाहर निकल जाते हैं। इससे शरीर की पाचन प्रणाली सामान्य होकर रक्त का बहाव सही हो जाता है। इसके परिणामस्वरूप त्वचा में खिंचाव आकर झुर्रियां हटती हैं। हम सुंदर और स्वस्थ दिखने लगते हैं।

आतंरिक सौदंर्य के लिए यह उपयोगी है। सांस लेने वाली क्रियाओं व शरीर के विभिन्न आसनों से हार्मोंस संतुलित होते हैं। आधा घंटा सुबह व शाम सूर्य नमस्कार, प्राणायाम, उत्थान आसन, कपाल भाती व सांसों की क्रिया करें।

बालों और त्वचा के सौंदर्य को बनाए रखने में प्राणायाम महत्वपूर्ण भमिका अदा करता है। प्राणायाम सही तरीके से सांस लेने का तरीका है। प्रतिदिन 10 मिनट तक प्राणायाम से मानव शरीर की प्रा.तिक क्लीजिंग हो जाती हैं। योग को जीवन में अपनाएं। यह फायदेमंद है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अब चेस्ट एक्स–रे से पलों में पता चलेगी कोरोना रिपोर्ट

अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के जरिए कोरोना वायरस का पता लगाया जा सकेगा। डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट ऑर्गिनाइजेशन(डीआरडीओ) के सेंटर फॉर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एंड रोबोटिक्स ने 5सी नेटवर्क और एचसीजी एकेडमिक्स की मदद से एआइ एल्गोरिद्म 'एटमेन' तैयार किया है।

इसका उपयोग चेस्ट एक्स–रे स्क्रीनिंग के लिए किया जाता है। इससे फेफड़ो में सक्रमण का मूल्याकंन भी किया जाएगा। इसकी एक्यूरेसी रेट 96.73 प्रतिशत है। सीएआइआर के डायरेक्टर डॉ. यू. के. सिंह ने कहा कि इस डायग्नोस्टिक टूल को डेवलप करने का मुख्य उदेश्य चिकित्सकों और फ्रंटलाइन वकर्स की मदद करना है। यह टूल कुछ पलों में रेडियोलॉजिकल फाइडिंस को ऑटोमेटकली डिटेक्ट कर कोविड–19 का पता लगाएगा। इससे इमरजेंसी केस में चिकित्सकों को मदद मिलेगी। इसे लगभग देश के 1000 अस्पतालों में इस्तेमाल किया जाएगा।

अनुभव अमृतम्

पाली के डिविजनल ऑफिस में पोस्टिंग दी। उस समय असिस्टेंड सुपरींडेन्ट साहब लश्करी साहब, सुपरीडेन्ट साहब एम.एल. शर्मा जी प्रतिदिन प्रातःकाल पोस्ट ऑफिस आ जाते। पोस्टमास्टर साहब के सामने बैठते, आधे घण्टे बाद पधार जाते। 1975 में एज ए पोस्ट ऑफिस एकान्उटेंट वहीं सुपरींडेंट पोस्ट ऑफिस नई पोस्टिंग हुई।

भगवान की परम् कृपा, सब कुछ कई बार रात को ग्यारह बजे तक ऑफिस से बंडल लाये हुए टीए. बिल, सैलेरी बिल उनको पास करते हुए करीबन 14 दिन तक रोज की मेहनत पोस्ट ऑफिस में उस समय करते थे। जब दृष्टि घूमती है, पई गाँव का शिविर 20 अप्रेल 1986 का रामनवमी की लगन लग गई। सोयाबीन तेल भी रखा हुआ है, शक्कर भी है, 300 बोरी गेहुं भी है। जब अभी पोस्टकार्ड से आया था अब कैम्प कहाँ लगाना है? अलसीगढ़ वालों का बहुत प्रेम, साहब हमारे गाँव में बहुत गरीबी है, हमारे गाँव आईये। हमारे गाँव में माताएं–बहने हैं, जिन्हें गर्भावस्था में भी पोषण नहीं मिलता।

छोटे–छोटे बच्चे हैं। अच्छा अगले रविवार को आपके यहाँ कैम्प लगाऐंगे, अलसीगढ़ गए। वहाँ के सरपंच साहब नानाभाई एक आदिवासी, वनवासी। बाद में तो बहुत सालों तक नानाभाई नारायण सेवा में रहे। बीस साल रहे करीबन और 2007 में उनका देहावसान हुआ, बहुत स्मृतियाँ। अलसीगढ़ गए पूरी बस में ऊपर करीबन 30 बोरी गेहूं का बनाया हुआ सत्तु पोषाहार, पौष्टिक आहार पंजीरी। वहाँ गये, देखा कई लोग हाथ बांधकर खड़े थे।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 174 (कैलाश 'मानव')

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023